अध्याय 1

मिस्र में इस्राएलियों का दास बनाया जाना

निर्गमन, इस्राएलियों का मिस्र से छुड़ाये जाने का वृतांत है। यह पुस्तक इस बात को स्मरण कराते हुए प्रारंभ होती है कि "इस्राएल के पुत्र" मिस्र कब आए थे (1:1-5)। याकूब और उसके परिवार के सदस्यों ने भीषण अकाल के समय नील नदी के उपजाऊ क्षेत्र में शरण ली थी। परमेश्वर ने याकूब के एक पुत्र, यूसुफ को आने वाले भीषण अकाल की चेतावनी देकर, उससे मिस्र में प्रचुर मात्रा में अन्न एकत्रित करवाया था (उत्पत्ति 41)।

वृतांत इस बात को जारी रखता है कि परमेश्वर के लोगों को छुटकारे की आवश्यकता क्यों पड़ी। क्योंकि मिस्र निवासी उनसे डर गए थे इसलिए उन्होंने उनको दास बना लिया था। समय के साथ-साथ इस्राएलियों की संख्या बढ़ती जा रही थी (1:6, 7)। एक नए राजा का उदय हुआ और वह "यूसुफ को नहीं जानता था" (1:8; KJV); अर्थात् या तो उसको यह स्मरण नहीं था या फिर वह यूसुफ को नहीं जानता था कि यूसुफ ने उस महा विपत्ति के समय मिस्र की कैसे सहायता की थी। मिस्री लोग इस बात से डर गए थे कि इब्रानी लोग जिनकी सामर्थ और संख्या उनसे बढ़ गई थी, विदेशी आक्रमण के समय कहीं शत्रुओं से मिलकर उनके विरुद्ध चढ़ाई न कर दे (1:9, 10)।

इसके पश्चात, मिस्री लोग - विशेषकर फ़िरौन - "इस्राएलियों की इस समस्या" का निदान ढूंढने लगे। उनका हर एक प्रयास असफल रहा; इसके बावजूद इस्राएली लोग बढ़ते चले गए।

सबसे पहले, मिस्रियों ने इस्राएलियों को सताया। इसके विपरीत, जितना उनको सताया गया, उतना ही वे बढ़ते चले गए। फ़िरौन ने उसके पश्चात इस्राएलियों से कठोर परिश्रम कराया, इससे भी उसके समस्या का समाधान नहीं हुआ (1:11-14)।

दूसरी बात फिर फ़िरौन ने मिस्री धाइयों को इस्राएलियों के नवजात बालकों को मारने का आदेश दिया। लेकिन धाइयों ने फ़िरौन के उद्देश्य की पूर्ति नहीं की। उन्होंने बच्चों को नहीं मारा और उन्होंने फ़िरौन से झूठ बोला कि वे बच्चों को क्यों नहीं मार पा रहे हैं। परिणामस्वरूप, लोग बढ़ते चले गए और परमेश्वर ने धाइयों को आशीषित किया (1:15-21)।

तीसरी बात यह है कि फ़िरौन ने यह आदेश दिया कि इस्राएलियों के सभी नवजात बच्चे नदी में फेंक दिए जाएं। इसका यह परिणाम निकला कि जो छुड़ाने वाला बच्चा था उसका पालन पोषण स्वयं फ़िरौन के राजमहल में हुआ (1:22-2:10)।

इस वृतांत का विषय यह है कि मनुष्य परमेश्वर का विरोध कैसे भी कर ले लेकिन कोई भी युक्ति उसके विरुद्ध नहीं चलती है।

मिस्र में इस्राएलियों का प्रवेश और उनकी समृद्धि (1:1-7)

[1]इस्राएल के पुत्रों के नाम, जो अपने अपने घराने को लेकर याकूब के साथ मिस्र देश में आए, ये हैं: [2]रूबेन, शिमोन, लेवी, यहूदा, [3]इस्साकार, जबूलून, बिन्यामीन, [4]दान, नप्ताली, गाद और आशेर। [5]और यूसुफ तो मिस्र में पहले ही आ चुका था। याकूब के निज वंश में जो उत्पन्न हुए वे सब सत्तर प्राणी थे। [6]यूसुफ और उसके सब भाई और उस पीढ़ी के सब लोग मर मिटे। [7]परन्तु इस्राएल की सन्तान फूलने-फलने लगी; और वे लोग अत्यन्त सामर्थी बनते चले गए, और इतना अधिक बढ़ गए कि सारा देश उनसे भर गया।

आयतें 1-5. यह सूची उत्पत्ति 46:8-27 को निर्गमन से जोड़ती है। यह इस वाक्यांश **अब वे नाम यह हैं** से प्रारंभ होता है और लोगों की उसी संख्या से यह वाक्यांश समाप्त होता है। यूसुफ को छोड़कर, क्योंकि वह पहले ही मिस्र पहुँच चुका था, **इस्राएल के ग्यारह पुत्रों** का नाम यहाँ अंकित है। परमेश्वर के चुने हुए लोग **याकूब** को दिया गया नाम "इस्राएल" (יִשְׂרָאֵל, *यिस्राएल)* के नाम से जाने जाते थे (उत्पत्ति 32:38; 35:10), जिसके पुत्र बारह गोत्रों के जनक बने। पुत्रों की यह सूची उनके माँ से पैदा होने के क्रमानुसार लिखा गया है: लिआ:, राहेल, बिल्हा और जिल्पा (उत्पत्ति 35:23-26)।

पाठ बताता है कि **सत्तर** लोग मिस्र गए थे जबकि स्तिफनुस ने पचहत्तर लोगों के बारे में बताया (प्रेरितों. 7:14)। इस भिन्नता का कारण क्या है? ग्लीसन एल. आर्चर, जूनियर के अनुसार स्तिफनुस ने "संभवतः सप्तति अनुवाद में दिए गए विस्तृत वंशावली का जिक्र किया होगा,"[1] जिसमें निर्गमन 1 में सत्तर के बजाय पचहत्तर लोगों का वर्णन है। उन्होंने इस बात का भी जिक्र किया है कि सेप्टुआजिंट में यूसुफ के कुछ नाती-पोतों को भी सम्मिलित किया गया होगा।[2] चाहे सत्तर हो या फिर पचहत्तर, दोनों सही हैं, यह इस पर निर्भर करता है कि कुल संख्या में किन-किन की गिनती हुई है।

आयतें 6, 7. सर्वप्रथम, याकूब का परिवार मिस्र में एक सम्मानित आगन्तुक था और वहाँ उनकी समृद्धि हुई। जब परमेश्वर ने उन्हें आशीष दी और उन्हें बढ़ाया तो उसने अब्राहम को दी अपनी प्रतिज्ञा की पूर्ति की (उत्पत्ति 12:2; 15:5; 17:1-8)। कितने लोग इस्राएल देश से लौट कर आए? छुटकारे के पश्चात लगभग 600,000 पुरुषों की गिनती बताई गई है (12:37; 38:26)।

टीकाकार, निर्गमन 1:7 और उत्पत्ति 1:28 के बीच समानता प्रस्तुत करते हैं: "परमेश्वर ने उन्हें आशीष दी; और परमेश्वर ने उनसे कहा, 'फूलो फलो, और सारी पृथ्वी पर भर जाओ।'" **इस्राएल की सन्तान फूलने-फलने लगी; और वे लोग अत्यन्त सामर्थी बनते चले गए, और इतना अधिक बढ़ गए कि सारा देश उनसे भर गया।** आरंभ में ही मनुष्य के लिए परमेश्वर की इच्छा का स्मरण यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि निर्गमन में परमेश्वर की "नई सृष्टि" संलग्न है, कि अपने लिए वह लोगों की सृजन कर रहा है। यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि उत्पत्ति 1:28 में "पृथ्वी" और निर्गमन 1:7 में "देश" के लिए एक ही इब्रानी शब्द (אֶרֶץ, *आरेत्स*) प्रयोग किया गया है।

"सारा देश उनसे भर गया" संभवतः मिस्र के उस भाग के लिए प्रयोग किया गया है जहाँ इस्राएल के लोग रहते थे जो गोशेन भी कहलाता है (उत्पत्ति 45:10)। यह "मिस्र देश के अच्छे से अच्छे भागों में, अर्थात् रामसेस नामक प्रदेश में, से भूमि देकर उनको सौंप दिया गया था" (उत्पत्ति 47:11)।

इस्राएली लोगों का मिस्र प्रवास का परिणाम यह निकला कि परमेश्वर की एक आज्ञा की पूर्ति हुई: अब्राहम की अनगिनत संतान हुईं। ऐसा लगता है कि परमेश्वर, अपनी इस प्रतिज्ञा की पूर्ति के लिए इस्राएलियों को मिस्र ले गया था। बाप दादों के समान इधर-उधर भ्रमण करने से छुटकारा पाकर, मिस्र की स्थाई जीवन जीने के द्वारा इस्राएली लोग फूले फले और बहुत बढ़ गए। कालांतर में इस्राएली लोगों को मिस्र प्रवास का स्मरण हुआ - या फिर कम से कम मिस्र का भोजन उन्हें स्मरण आया - जो वे बड़े प्रेम से कहते थे कि वहाँ वे "मांस की हांडियों के पास बैठकर मनमाना भोजन करते थे" (16:3)। जब वे मरुस्थल में भटक रहे थे तो उन्होंने कहा, "हमें वे मछलियाँ स्मरण हैं जो हम मिस्र में सेंतमेंत खाया करते थे, और वे खीरे, और खरबूजे, और गन्दने, और प्याज, और लहसुन भी" (गिनती 11:5)। हो सकता है कि उन्होंने मिस्र की जीवन की अतिशयोक्ति की होगी लेकिन उन्होंने वहाँ की जीवन का भरपूर आनंद उठाया होगा। परमेश्वर के उद्देश्य की पूर्ति के लिए मिस्र, अनगिनत लोगों के पैदाइश के लिए उपयुक्त भूमि थी।

इस्राएली सताए गए लेकिन नाश नहीं हुए (1:8-22)

जबरन मजदूरी की आज्ञा (1:8-14)

8मिस्र में एक नया राजा गद्दी पर बैठा जो यूसुफ को नहीं जानता था। 9उसने अपनी प्रजा से कहा, "देखो, इस्राएली हम से गिनती और सामर्थ्य में अधिक बढ़ गए हैं। 10इसलिये आओ, हम उनके साथ बुद्धिमानी से बर्ताव करें, कहीं ऐसा न हो कि जब वे बहुत बढ़ जाएँ और यदि संग्राम का समय आ पड़े, तो हमारे बैरियों से मिलकर हम से लड़ें और इस देश से निकल जाएँ।" 11इसलिये उन्होंने उन पर बेगारी करानेवालों को नियुक्त किया कि वे उन पर भार डाल-डालकर उनको दुःख दिया करें; और उन्होंने फ़िरौन के लिये पितोम और रामसेस नामक भण्डारवाले

नगरों को बनाया। 12पर ज्यों ज्यों वे उनको दु:ख देते गए, त्यों त्यों वे बढ़ते और फैलते चले गए; इसलिये वे इस्राएलियों से अत्यन्त डर गए। 13तौभी मिस्रियों ने इस्राएलियों से कठोरता के साथ सेवा करवाई, 14और उनके जीवन को गारे, ईंट और खेती के भाँति-भाँति के काम की कठिन सेवा से दु:खी कर डाला; जिस किसी काम में वे उनसे सेवा करवाते थे उसमें वे कठोरता का व्यवहार करते थे।

आयत 8. एक नया राजा गद्दी पर बैठा जो यूसुफ को नहीं जानता था का संभवतः यह अर्थ है कि गुजरते समय के साथ ही, एक राजा (फ़िरौन) हुआ जो यूसुफ को नहीं जानता था या जो उसने मिस्रियों के लिए किया था उसकी उसने सराहना नहीं की। उसने पूरे मिस्र देश को सात वर्ष की भीषण अकाल से बचाया था। यह राजा कौन था? यद्यपि इस प्रश्न का उत्तर निर्गमन की तिथि पर आधारित है, लेकिन दो तथ्य इस संबंध में कहे जा सकते हैं: (1) परमेश्वर ने अपने पाठकों को उस राजा का नाम प्रकट करने की आवश्यकता नहीं समझी, और (2) सताव के समय वह जीवित था परंतु इस्राएलियों के छुटकारे से पहले उसका देहांत हो चुका था (2:23)।

इस फ़िरौन की पहचान के बारे में दो प्रमुख संभावनाएं हैं। यदि निर्गमन के लिखे जाने की पूर्वार्द्ध तिथि (c. 1290 ई.पू.) स्वीकार की जाए तो जिस समय मूसा ने मिस्र छोड़ा था उस समय का फ़िरौन सेती प्रथम था और निर्गमन के समय का फ़िरौन रामसेस द्वितीय था। यदि उत्तरार्द्ध तिथि (c. 1445 ई.पू.) स्वीकार की जाए तो जिस समय मूसा ने मिस्र छोड़ा था उस समय का फ़िरौन थुटमोस चतुर्थ था और निर्गमन के समय का फ़िरौन आमेनहोतेप द्वितीय था।[3]

कुछ लोगों का मत है कि यह "नया राजा" हिक्सॉस से संबंधित है जिसने मिस्र में 1670 से 1550 ई.पू. तक शासन किया था। इसका एक दृष्टिकोण यह है कि याकूब के परिवार को मिस्र में हिक्सॉस, जो सामी लोग थे, के कारण शरण मिली थी, जो उस समय मिस्र में शासन कर रहे थे। तब, एक शासक जो सामी नहीं था - संभवतः एक मिस्री शासक जो संभवतः यूसुफ को नहीं जानता था - राजगद्दी पर बैठा तो वह इस्राएलियों का हितैषी नहीं हुआ और इसलिए उसने उनको दास बना लिया था। अन्य लोगों का यह मत है कि वह "फ़िरौन जो यूसुफ़ को नहीं जानता था" वह एक हिक्सॉस शासक था, और याकूब के परिवार को एक स्थानीय मिस्री राजा ने अपने यहाँ शरण दी थी लेकिन कालांतर में हिक्सॉस शासकों ने उनको दास बना लिया था।

आयत 9. जब फ़िरौन ने कहा कि इस्राएली, मिस्रियों से **गिनती और सामर्थ में अधिक बढ़ गए हैं** तो वह निस्संदेह अतिशयोक्ति कर रहा था। फिर भी, उसका डरना ठीक था। वह क्यों घबरा गया था? कुछ विद्वानों का मत है कि मिस्रियों को इस्राएलियों का भय भूतकाल के अनुभव के कारण सता रहा था, जिसमें कुछ विदेशियों, संभवतः हिक्सॉस ने उन पर आक्रमण किया होगा। यदि एक विदेशी देश - विशेषतः एक सामी देश जो याकूब के वंशजों का हो - मिस्र पर चढ़ाई करे, तब जो इस्राएली लोग मिस्रियों के बीच रहते हैं, उन्हें हराने के लिए चढ़ाई करने

वाले देश के साथ वे मिल जाएंगे।

आयत 10. इस तरह उनकी तीव्र बढ़ोत्तरी के कारण, राजा ने उनके साथ **बुद्धिमानी से बर्ताव कर** (חָכַם, *हाकाम)* उन्हें दास बना लिया। इस प्रकार का अधार्मिक कार्य "बुद्धिमानी" से कैसे किया जा सकता है? पुराने नियम में बुद्धि की अवधारणा का तात्पर्य कुछ कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करना है। जबकि बुद्धिमान व्यक्ति अक्सर धर्मी व्यक्ति समझे जाते थे, लेकिन बुद्धि, अधार्मिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है। इस कारण, इस इब्रानी शब्द का अनुवाद "चतुर" (2 शमूएल 13:3) भी किया जा सकता है। मिस्रियों के दृष्टिकोण से इस्राएलियों को दास बनाना बुद्धिमानी का कार्य था क्योंकि ऐसा करने से उनके उद्देश्य की पूर्ति होती थी।

आयत 11. इस्राएलियों पर **भार डालकर दुःख देने** के पीछे वास्तविक जीवन की घटना क्या थी? क्या मिस्री सेना अचानक प्रकट हुई जिन्होंने दरवाजों को जबरन खुलवाकर और स्वस्थ पुरुषों को कार्य स्थलों पर बलपूर्वक घसीटा? क्या इस संबंध में सूचनाएं चिपका दी गई थी कि पुरुष कार्य करने के लिए आ जाएं और यदि वे प्रकट न हुए तो उनको यातनाएं दी जाएंगी? पाठ ये सारी जानकारियाँ नहीं देता है। फिर भी, पाठ यह बताता है कि इस्राएली दासों ने **पितोम और रामसेस नामक भण्डारवाले** [दो] **नगरों को बनाया**। ये दोनों नगर नील नदी के पूर्वी डेल्टा पर स्थित था, हालांकि इनकी वास्तविक स्थिति विवादित है। जो लोग निर्गमन की पुस्तक के लिखे जाने के उत्तरार्द्ध तिथि का समर्थन करते हैं वे अक्सर "रामसेस" नगर की पहचान रामसेस द्वितीय से करते हैं जिसने एक नगर बसाया था उसका नामकरण उसने अपने नाम के अनुसार किया था। लेकिन जो लोग पूर्वार्द्ध तिथि का समर्थन करते हैं उनका मत है कि रामसेस नाम उस स्थान को दर्शाता है जहाँ याक़ूब और उसके परिवार ने शरण ली थी (उत्पत्ति 47:11), एक ऐसी घटना जिसे रामसेस के वंश से जोड़ा जा सकता है। कुछ लेखक "पितोम" को बाइबल के सुक्कोत से जोड़ते हैं (12:37; 13:20; गिनती 33:5, 6), जबकि अन्य विद्वान इन दोनों नगरों में विभेद करते हैं।

आयत 12. सताव फ़िरौन के योजना के अनुकूल नहीं था। इस्राएली लोग, घटने के बजाय **बढ़ते और फैलते चले गए**। यहाँ हमें निर्गमन की पुस्तक का मुख्य विषय मिलता हैः परमेश्वर अपने लोगों के साथ था और वह अपनी इच्छा की पूर्ति करेगा। जो भी फ़िरौन या मिस्री लोगों ने किया वह उसके उद्देश्यों को टाल नहीं सकता।

आयतें 13, 14. मिस्री शासकों ने इस्राएलियों को पंगु बनाने के लिए उनकी बेगारी को दुगुना कर दिया। लेखक ने इस्राएलियों को दुःख देने के लिए अपनाये गए अलग-अलग हथकण्डों का जोर देने के लिए विभिन्न विश्लेषण प्रस्तुत किया है। **तौभी मिस्रियों ने इस्राएलियों से *कठोरता* के साथ सेवा करवाई, और उनके जीवन को गारे, ईंट और खेती के भाँति-भाँति के काम की *कठिन सेवा से* दुःखी कर डाला; जिस किसी काम में वे उनसे सेवा करवाते थे उसमें वे *कठोरता* का व्यवहार करते थे।** फिर भी, "कठोरता" और "कठिन सेवा" ने इस्राएलियों को बढ़ने से नहीं रोका

और तब फ़िरौन ने सोचा कि अब दूसरा कदम उठा लिया जाना चाहिए।

नवजात शिशुओं को मृत्युदण्ड का आदेश (1:15-22)

15शिप्रा और पूआ नामक दो इब्री धाइयों को मिस्र के राजा ने आज्ञा दी, 16"जब तुम इब्री स्त्रियों को बच्चा उत्पन्न होने के समय प्रसव के पत्थरों पर बैठी देखो, तब यदि बेटा हो तो उसे मार डालना, और बेटी हो तो जीवित रहने देना।" 17परन्तु वे धाइयाँ परमेश्वर का भय मानती थीं, इसलिये मिस्र के राजा की आज्ञा न मानकर लड़कों को भी जीवित छोड़ देती थीं। 18तब मिस्र के राजा ने उनको बुलवाकर पूछा, "तुम जो लड़कों को जीवित छोड़ देती हो, तो ऐसा क्यों करती हो?" 19धाइयों ने फ़िरौन को उत्तर दिया, "इब्री स्त्रियाँ मिस्री स्त्रियों के समान नहीं हैं; वे ऐसी फुर्तीली हैं कि धाइयों के पहुँचने से पहले ही उनको बच्चा उत्पन्न हो जाता है।" 20इसलिये परमेश्वर ने धाइयों के साथ भलाई की; और वे लोग बढ़कर बहुत सामर्थी हो गए। 21इसलिये कि धाइयाँ परमेश्वर का भय मानती थीं, उसने उनके घर बसाए। 22तब फ़िरौन ने अपनी सारी प्रजा के लोगों को आज्ञा दी, "इब्रियों के जितने बेटे उत्पन्न हों उन सभों को तुम नील नदी में डाल देना, और सब बेटियों को जीवित रहने देना।"

आयत 15. अब तक परमेश्वर के चुने हुए लोग "इस्राएल के पुत्र" (1:7, 9, 12, 13) या "इस्राएली" कहलाते थे (NRSV)। इस अध्याय में, **धाइयों** और स्त्रियों को संबोधित करने के लिए अब **इब्री** शब्द का प्रयोग किया गया है (1:15, 16, 19)। (NRSV के 22 आयत में "इब्रियों" शब्द का भी प्रयोग किया गया है।) "इब्री" शब्द का शाब्दिक अर्थ "जो दूसरे छोर का है" और यह अब्राहम का परात महानद के पूर्वी तट, ऊर से पलायन की ओर इंगित करता है (देखें यहोशू 24:2, 3)।[4] दूसरे स्रोत यह सुझाव प्रस्तुत करते हैं कि "इब्री," "'इस्राएल' से अधिक विस्तृत और पुराना शब्द" है अर्थात "जब विदेशियों ने अब्राहम या उसके लोगों के लिए जब भी कुछ बोला, यह उनके ओर इशारा करता था (उत्पत्ति 39:14, 17; 40:15)," और "इब्री" (עִבְרִי, *इब्री)* नाम को, उत्पत्ति 10:21 के अनुसार शेम के पुत्र एबेर (עֵבֶר) से संबंधित किया जा सकता है।[5] जबकि नहूम एम. सारना इस विचारधारा से असहमत हैं, उनका कहना है कि इस शब्द की उत्पत्ति को रहस्यमय ही बने रहने देना चाहिए।[6]

इस कहानी की एक मजेदार पहलू यह है कि केवल दो धाइयाँ **शिप्रा** और **पूआ** का ही नाम उल्लेखित है। क्या करोड़ों की संख्या में रहने वाले लोगों के बीच केवल दो धाइयों की आवश्यकता थी? इसका सबसे आसान व्याख्या यह है कि इस्राएलियों के बीच ये दोनों महिलाएं प्रभारी थीं।

आयत 16. इस्राएलियों को दास बनाने के पश्चात फ़िरौन की अगली चाल यह थी वह उनके बालकों को पैदा होती ही इब्री धाइयों के हाथों मरवा डाले। **जन्मने वाले पत्थरों पर बैठे देखो** (עַל-הָאָבְנָיִם, *अल हाब्बनयीम)* का शाब्दिक अर्थ

"पत्थरों पर" है, जिसका स्पष्ट आशय यह है कि "जिस स्थान पर परंपरागत तरीके से महिलाएं बच्चे जनते समय बैठतीं थीं।"[7] **बालकों** को इसलिए मार डाला जाना चाहिए था क्योंकि वे "योद्धा और बलवा करने वाले हो सकते थे," जबकि **पुत्रियों** को यदि जीवित छोड़ दिया जाता तो वे मिस्रियों के लिए बच्चे पैदा कर सकते थे, जिससे उनकी जनसंख्या में बढ़ोत्तरी होती।[8]

आयत 17. धाइयों ने फ़िरौन की आज्ञा नहीं मानी क्योंकि वे **परमेश्वर से डरतीं थीं।** चूँकि ये महिलाएं "इब्री धाइयाँ" कहीं जातीं थीं और इनका सामी नाम था (1:15), संभवतः वे इस्राएली थीं; इसलिए, इसमें कोई आश्यचर्यजनक बात नहीं है कि वे "परमेश्वर से डरतीं थीं।" निर्गमन की पुस्तक की इस आयत में "परमेश्वर" का विशिष्ट नाम दिया गया है, लेकिन इससे पहले जो कुछ भी हुआ उसमें परमेश्वर का उपाय करने वाला हाथ दिखाई देता है। क्योंकि लोगों ने परमेश्वर पर विश्वास किया था अतः एक बार फिर फ़िरौन की हार हुई!

आयतें 18, 19. जब फ़िरौन ने उनसे पूछा कि उन्होंने उसके आदेश का पालन क्यों नहीं किया तो स्पष्ट रूप से धाइयों ने यह कहकर झूठ बोला कि **इब्री स्त्रियाँ मिस्री स्त्रियों के समान नहीं हैं; वे ऐसी फुर्तीली हैं कि धाइयों के पहुँचने से पहले ही उनको बच्चा उत्पन्न हो जाता है।** स्पष्ट रूप से फ़िरौन ने धाइयों की झूठी कहानी मानी जो इस वृतांत में एक हास्यास्पद बात जोड़ती है। फ़िरौन ने "बुद्धिमानी" (1:10) से बर्ताव करने का प्रयास किया था, परंतु उसने धाइयों की धूर्त भरी कहानी पर विश्वास करके अपने आपको मूर्ख ठहराया। टेरेंस ई. फ्रेथीम ने कहा, "दो दीन-हीन इब्री स्त्रियों ने मिस्र के राजा को शांत कर दिया, जो बुद्धि की एकलौते टिप्पणी का सटीक उदाहरण है! यद्यपि यह व्यंग्यात्मक है, क्योंकि कोई भी राजा केवल धाइयों के प्रत्युत्तर को संतोषजनक नहीं मान सकता था।"[9]

आयतें 20, 21. परिणामस्वरूप, फ़िरौन की योजना काम नहीं आई। इस्राएली लोग बढ़ते चले गए और परमेश्वर ने धाइयों को विशेष रूप से आशीष दीः वह **धाइयों के प्रति भला था** और उसने **उनके घर बसाए**। NRSV में ऐसा लिखा है कि परमेश्वर ने उन्हें परिवार दिए, जिसका तात्पर्य यह हो सकता है कि इससे पहले उनकी संतान नहीं थी।

यह अनुच्छेद जनसंख्या वृद्धि के बारे में है। इस्राएली लोग बढ़ते चले गए; और मिस्रियों ने उनके जनसंख्या रोकने का प्रयास किया परंतु फ़िरौन की युक्ति काम न आई। जब धाइयों ने माना कि "परमेश्वर की यह योजना कि वह इस्राएलियों को अधिक बढ़ाएगा ... तो उन्होंने अपने लिए एक बड़े परिवार सुनिश्चित कर लिया था।"[10] इस बात में परमेश्वर की स्वीकृति यह बताती है कि उनका नाम इस वचन में पाया जाता है। इस कार्य ने उन्हें "सम्मान और महत्व" प्रदान किया,[11] इसके विपरीत यहाँ फ़िरौन का नाम तक उल्लेख नहीं किया गया है। प्राचीन मध्य पूर्व की मिस्र के महान राजा फ़िरौन की आज्ञा का उल्लंघन दो महत्वहीन धाइयों ने किया जिनको परमेश्वर ने बहुत महत्वपूर्ण बना दिया।

धाइयों के झूठ के बारे में क्या कहा जा सकता है? संभवतः, यह झूठ ही नहीं था; शायद इब्री स्त्रियां अपने बच्चे, धाइयों के पहुँचने से पहले ही जन्म देती थीं।

टीकाकार, भूगर्भशास्त्र में इस तथ्य का प्रमाण ढूंढते हैं जो यह कहता है कि इब्री स्त्रियां, मिस्री स्त्रियों से अधिक सुदृढ़ थीं, लेकिन यह इस बात को नहीं प्रमाणित करता है कि धाइयों ने राजा को धोखा देने की मनसा नहीं बनाई थी। दूसरी संभावना यह है कि धाइयों ने बच्चे जनने वाली स्त्रियों के पास आने में जानबूझकर देरी की होगी और तब तक वे अपने बच्चे जन चुकी होंगी। लेकिन, इस प्रकार का तर्क इस समस्या का समाधान करने के बजाय अधिक उलझा देती है।

कोई भी यह तर्क कर सकता है कि क्या ऐसी परिस्थिति में परमेश्वर झूठ का अनदेखा करेगा, जिसमें परिस्थिति का वह स्वयं नियंत्रण करता हो और संकट के समय जब कोई सत्य न बोलकर झूठ का सहारा लेता हो। फिर भी, यह माना जा सकता है कि धाइयों ने झूठ बोला था। बाइबल इस झूठ पर आशीष का उच्चारण नहीं करती है, परंतु यह इस वृतांत का एक भाग है। इस दृष्टिकोण से, हम यह कह सकते हैं कि परमेश्वर ने धाइयों को उनके झूठ बोलने के लिए अशीष नहीं दी, परंतु परमेश्वर ने उन्हें इसलिए आशीष दी क्योंकि उन्होंने इस्राएलियों के बच्चों को मारने से इनकार किया था। झूठ को उचित ठहराने की आवश्यकता नहीं है (चूंकि अभिषिक्त लेखक ने इसे उचित नहीं ठहराया), और न ही यह अभ्यास मसीहियों के सामने उचित उदाहरण प्रस्तुत करता है कि जब परिस्थिति ऐसी हो तो उन्हें झूठ बोलना चाहिए।

आयत 22. मेसोरेटिक टेक्स्ट[12] के आधार पर NASB, यह स्पष्ट नहीं करता है कि **बेटे** जो **नील नदी में डाले गए** वे इब्रियों के पुत्र थे। फिर भी, कुछ अनुवाद, पुराने नियम के दूसरे गवाहों का अनुसरण करते हुए,[13] यह स्पष्ट करते हैं कि ये बेटे इब्रियों के ही बच्चे थे। NRSV में ऐसा लिखा है, "हर एक पुत्र जो इब्रियों के घर में पैदा हों, उन्हें तुम नील नदी में फेंक देना, लेकिन लड़कियों को तुम जीवित छोड़ देना।"

यूं **फ़िरौन** ने यह दुर्भाग्यपूर्ण आदेश जारी किया जो इस्राएलियों के लिए तो अति क्रंदन का समय होगा, लेकिन दूसरी ओर, एक ऐसे व्यक्तित्व का उदय होगा जिसे परमेश्वर अपने लोगों को दासता से छुड़ाने के लिए प्रयोग करेगा। कालांतर में मिस्रियों के पहलौठों की मृत्यु (12:29, 30), वर्षों पहले फ़िरौन की इस आज्ञा के दंड के रूप में देखा जा सकता है जो उसने निर्दोष इस्राएलियों के बच्चों को मारने के लिए जारी किया था। इस घटना के हजारों वर्षों पश्चात, एक और राजा ने अपने विरोधी राजा को मारने के जुनून में कई छोटे बच्चों की हत्या कर दी थी (मत्ती 2:16)!

अनुप्रयोग

परमेश्वर के विरुद्ध लड़ने की निरर्थकता (अध्याय 1)

जेम्स वेल्डन जॉनसन ने एक कविता - एक आयत में संदेश - उड़ाऊ पुत्र पर इन शब्दों के साथ आरंभ किया: "हे जवान, हे जवान, तेरी भुजा परमेश्वर के साथ संघर्ष करने के लिए बहुत छोटी हैं।"[14] ये पंक्तियां हमारे स्मरण में इसके विस्तृत

दृश्य के कारण टिकी रहती हैं। जरा ऐसी कल्पना कीजिए कि एक बॉक्सर जिसके हाथ छोटे हों वह अपने एक ऐसे विरोधी बॉक्सर के विरुद्ध लड़ रहा हो जिसके हाथ बहुत बड़े हों। मध्य युग के दो हथियारों से सुसज्जित व्यक्तियों के बारे में कल्पना कीजिए जो घोड़े पर सवार होकर प्रतियोगिता के लिए तैयार हों। एक की भाला तो बारह फुट की है तो दूसरे की केवल छः फुट की है! उसी तरह, हम दो प्रतियोगी दल के बारे में सोच सकते हैं जो किसी भी तरह से मेल न खाती हों। उदाहरण के लिए, 2003 में रग्बी वर्ल्ड कप श्रृंखला में, ऑस्ट्रेलियाई दल ने नामीबिया के दल को 142-0 से हराया था। कवि जॉनसन यह कह रहा था कि जब हम परमेश्वर के विरुद्ध लड़ते हैं, तो हमारी परिस्थिति भी ऐसी ही होती है। हमारे जीतने की कोई संभावना नहीं है।

निर्गमन में परमेश्वर के विरुद्ध लड़ने की निरर्थकता चित्रित की गई है। इस पुस्तक में जो कहानी बताई गई है वह एक सच्चे परमेश्वर बनाम मिस्र के कई देवी-देवताओं की है। हम इसे इस प्रकार भी देख सकते हैं, एक सच्चे परमेश्वर बनाम फ़िरौन, जो एक देवता माना जाता था। अंततः, परमेश्वर की ही विजय हुई। इस्राएल छुड़ाया गया, और स्वयं फ़िरौन ने परमेश्वर के सामर्थ का अंगीकार किया।

निर्गमन की पुस्तक का प्रथम अध्याय इस कहानी का समीक्षा प्रस्तुत करता है। यहाँ फ़िरौन ने परमेश्वर के लोगों हराने के लिए सतत प्रयास किया, और वह इस प्रकार परमेश्वर को हराना चाहता था, लेकिन उसको उसके हर एक प्रयास में असफलता का सामना करना पड़ा।

1. *फ़िरौन ने उनको दास बनाया।* क्यों? क्योंकि वह उनसे डरता था। परिणाम क्या हुआ? इस्राएल के लोग बढ़ते चले गए और चारों ओर फैल गए (1:12)।

2. *फ़िरौन ने उनके कार्य को और अधिक बढ़ा दिया।* जब उसने देखा कि उसका प्रथम प्रयास सफल नहीं हुआ, तो फ़िरौन ने उन लोगों को और अधिक परिश्रम करने के लिए प्रताड़ित किया (1:13, 14)। स्पष्टतया, इस युक्ति ने भी कार्य नहीं किया, फिर फ़िरौन ने कुछ और कड़े कदम उठाए।

3. *फ़िरौन ने इब्री धाइयों को बालकों को मार डालने के लिए कहा* (1:15, 16)। धाइयों ने फ़िरौन के इस आदेश का पालन नहीं किया क्योंकि वे "परमेश्वर से डरतीं थीं" (1:17-21), और परमेश्वर ने इन धाइयों का आदर किया। उसने उन्हें परिवार देकर "उनके घर बसाए" (1:21) (NRSV)। इसके साथ ही, उसने उनके कहानी और नामों को भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित रखा। (ध्यान दें कि इन महिलाओं का नाम निर्गमन की पुस्तक में पाया जाता है जबकि फ़िरौन का नाम नहीं पाया जाता है।) सामर्थी फ़िरौन की योजना को इन निम्न धाइयों ने विफल कर दिया!

4. *फ़िरौन की अगली आज्ञा यह थी कि नवजात बालकों को नील नदी में फेंक दिया जाए* (1:22)। एक मायने में, फ़िरौन इस समय सफल रहा कि उसकी आज्ञा का पालन किया गया। बाद में, जबकि, मिस्रियों को इसका मूल्य अपने पहलौठों के मृत्यु के द्वारा चुकाना पड़ा (4:23)! दूसरे मायने में, फ़िरौन की इस

युक्ति का ईंट का जवाब पत्थर से दिया गया, क्योंकि इस युक्ति ने परमेश्वर को फ़िरौन के घर में ही इस्राएल का छुड़ाने वाले का पालन पोषण उसी के माँ के द्वारा करने का अवसर प्रदान किया! परमेश्वर इन दृश्यों के पीछे अपने योजना को पूरा करने के लिए कार्य कर रहा था।

परमेश्वर के विरुद्ध युद्ध करना व्यर्थ है। इस संसार की सभी बुरी शक्तियाँ, यद्यपि वे आज विजय होते हुए दिखाई देती हैं, लेकिन अंत में पराजित होंगी! (यही प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का शीर्षक है।) फ़िरौन का परमेश्वर को पराजित करने का व्यर्थ प्रयास यह प्रमाणित करता है कि मानव जाति परमेश्वर के विरुद्ध नहीं लड़ सकती और न ही वह जीत सकती है। हम उसके विरुद्ध तब लड़ते हैं जब हम दण्ड मुक्त तरीके से पाप करने का बर्ताव करते हैं, मानो हम परमेश्वर के विरुद्ध पाप कर सकते हैं और पकड़े नहीं जा सकते हैं। जहाँ परमेश्वर कार्य करता है वहाँ से हम बच नहीं सकते हैं। परमेश्वर ने अपने कायनात में परिणाम का नियम बांधा हैः "क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा" (गला. 6:7)। इस कायनात के सृष्टिकर्ता के विरुद्ध कार्य करने के लिए हमें अपना लेखा देना होगा।

परमेश्वर का बोने और काटने का नियम निर्मम है। फिर भी, उसने हमें कुछ ऐसा प्रदान किया है जो उस नियम का अधिक्रमण करता है। हम मसीह के मृत्यु के द्वारा पाप का परिणाम भुगतने से बच सकते हैं। पश्चाताप करके और आज्ञा मानकर मसीह के पास आने के द्वारा, परमेश्वर के अनुग्रह और मसीह के लहू के द्वारा हम अपने पापों से छुटकारा प्राप्त कर सकते हैं।

इस्राएलियों की बंधुआई और परमेश्वर का उपाय (1:1-14)

इस्राएल, मिस्र में क्यों था? यूसुफ ने कहा कि जब उसके भाइयों ने उसे मिस्र में बेच दिया तो उनके इरादे बुरे थे परंतु "परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया ... कि बहुत से लोगों के प्राण बचे" (उत्पत्ति 50:20)। परमेश्वर ने यूसुफ को अकाल के समय के लिए मिस्र में याक़ूब के परिवार के लिए नियुक्त किया था। परंतु, यूसुफ का उत्तर पूरी कहानी नहीं है। यदि परमेश्वर अपने परिवार को जीवित रखना चाहता था, तो वह अकाल रोक सकता था। परमेश्वर चाहता था कि उसके लोग मिस्र जाएं। क्यों? (1) ताकि वे वहाँ बढ़ सकें। (2) ताकि वह उनको मिस्र से छुड़ाकर अपना अनुग्रह और सामर्थ समझा सके।

स्त्रियों की महत्वता (1:15-22)

निर्गमन की पुस्तक इस ओर संकेत करती है कि स्त्रियों ने परमेश्वर के लोगों का छुटकारा और रक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। दो धाइयों ने फ़िरौन का इब्री बालकों को मारने की योजना को विफल किया (1:15-22)। मूसा की माँ ने अपने पुत्र को बचाने के लिए उसे एक टोकरी में रखकर नदी में छोड़ा। एक मिस्री राजकुमारी ने उस बालक को पाया और उसका पालन पोषण करने का निर्णय किया। जब तक मूसा को राजकुमारी ने नहीं उठाया, तब तक उसकी बहन उसको

देखती रही (2:1-10)। इसके साथ ही यह जोड़ा जा सकता है कि जंगल में यित्रो की बेटी ने मूसा के लिए एक घर की व्यवस्था की (2:16-22) और सिप्पोरा का अपने पुत्र की खतना करने का परिणाम मूसा का जीवन बचाने का कारण बना (4:24-26)। संभवतः परमेश्वर जीवन बचाने और रक्षा करने में स्त्रियों की भूमिका का वर्णन करने का प्रयास कर रहा था।

समाप्ति नोट्स

[1]ग्लीसन एल. आर्चर, जूनियर, *एनसाइक्लोपीडिया आफ बाइबल डिफिकल्टीज* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन पब्लिशिंग हॉउस, 1982), 378. [2]उपरोक्त, 379. [3]ग्लीसन एल. आर्चर, जूनियर, *ए सर्वे आफ ओल्ड टेस्टामेंट इंट्रोडक्शन*, रिवाइज्ड एंड एक्सपैंडिड (शिकागोः मूडी प्रेस, 1994), 244-46. [4]फ्रांसिस ब्राऊन, एस. आर. ड्राइवर, और चार्ल्स ए. ब्रिग्गस, *द ब्राऊन-ड्राइवर-ब्रिग्गस हिब्रू एण्ड इंगलिश लेक्सीकन* (बॉस्टनः हूटन, मिफलिन एण्ड कम्पनी, 1906; पुनर्मुद्रित, पीबॉडी, मासाचुसेट्सः हेन्ड्रीक्सन पब्लिशर्स, 1997), 720. [5]निर्गमन 1:15 की टिप्पणी, ब्रूस एम. मेट्सगर और रॉनाल्ड ई. मर्फी, सम्पादक, *द न्यू आक्सफोर्ड एन्नोटेड बाइबल विद दि अपोक्रिफा*, संशोधित और अभिवर्धित (न्यू यॉर्कः आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस, 1991), 70; अलफ्रेड हलडर, "हिब्रू," *दि इंटप्रेटर्स डिक्शनरी आफ द बाइबल में,* सम्पादक जॉर्ज आर्थर बटरिक (नैसविलः अबिंगदोन प्रेस, 1962), 2:552. एनसन एफ. रैनी के अनुसार "इस शब्द का स्पष्ट आशय किसी जाति या राष्ट्रीय समूह का निर्धारण करना है" (एनसन एफ. रैनी, "हीब्रूज," *हार्पर्स बाइबल डिक्शनरी* में, सम्पादक पॉल जे. एक्टेमेयर [सैन फ्रांसिस्कोः हार्पर एण्ड रो, 1985], 379)। [6]नहूम एम. सारना, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडसः दि ओरीजिन्स आफ बिब्लिकल इजराएल* (न्यू यॉर्कः शोकन बुक्स, 1996), 54-55. [7]अम्बर्टो कसुटो, *ए कमेंट्री आन द बुक आफ एक्सोडस*, अनुवादक इस्राएल अब्राहामास (जेरूसलेमः मैगनस प्रेस, 1997), 14. [8]वाल्देमार जैनजन, *एक्सोडस*, बिलीवर्स चर्च बाइबल कमेंट्री (स्कोट्टडेल, पासाडेनाः हेराल्ड प्रेस, 2000), 38. [9]टेरेंस ई. फ्रेथीम, *एक्सोडस*, इंटरप्रिटेशनः ए बाइबल कमेंट्री फॉर टीचिंग एण्ड प्रीचिंग (लुइविलः जॉन नॉक्स प्रेस, 1991), 34. [10]जैनसेन, 39.

[11]उपरोक्त। [12]"मेसोरेटिक टेक्स्ट" (MT) जिस वाक्यांश का उल्लेख करता है वह "इब्रानी [पुराने नियम] वाक्यांश/पाठ है जो उसने विराम चिह्न के व्याख्या के रूप में संग्रहित किया है और मेसोरी (या मेसोराइट्स) के द्वारा उच्चारण किया जाता है, जो पवित्र शास्त्र के आधिकारिक शिक्षक थे" (रिचार्ड एन. सूलेन और आर. केंडॉल सूलेन, *हैंडबुक आफ बिब्लिकल क्रिटिसिज्म*, तीसरा संस्करण, संशोधित और विस्तृत [लुईविलः वेस्टमिंस्टर जॉन नॉक्स प्रेस, 2001], 109)। [13]इसके पाठ के लिए NRSV, सामरी पंचग्रंथ, सप्तति अनुवाद, और आरामी तारगुम (रब्बियों की व्याख्या वाला इब्रानी पवित्र शास्त्र का अनुवाद) का सहारा लेता है। [14]जेम्स वेल्डन जॉनसन, *गॉड्स ट्राम्बोन्स* (न्यू यॉर्कः वाइकिंग प्रेस, 1927; पुनर्मुद्रित, न्यू यॉर्कः पेंग्विन बुक्स, 1976), 21.